

Distressful situation faced by medical M.Sc. teachers and biomedical students

SHRI K. T. S. TULSI (Nominated): Sir, I want to raise the issue of thousands of persons holding the Masters of Science degree from the medical colleges which are recognised by the Medical Council of India. They are all facing distressful situation with the threat that they will lose their jobs because the MCI is now proposing to scrap the three-year medical M.Sc. course. As a result of this there will be further shortage of teachers in the medical colleges and also shortage of non-clinical doctors. I would only request the Government to reconsider this proposal of scrapping the three-year Masters course meant for non-clinical doctors from the universities or medical colleges which are recognised by the Medical Council of India.

SHRI K. C. RAMAMURTHY (Karnataka): Sir, I associate myself with the Zero Hour submission made by the hon. Member.

SHRI TIRUCHI SIVA (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with the Zero Hour submission made by the hon. Member.

Concern over decreasing number of sittings during the sessions of Parliament

श्री संजय सेठ (उत्तर प्रदेश): सर, यह बहुत गम्भीर मसला है, जिस पर आपने आज सुबह भी कहा और रोज़ाना इसी विषय पर बात हो रही है कि संसद में हम लोगों की बैठकें कम होती जा रही हैं। जहाँ पहली राज्य सभा में 110 से लेकर 115 सिटिंग्स तक होती थीं, अब घटते-घटते वे 50-60 सिटिंग्स रह गई हैं। जितने विधेयकों पर यहां चर्चा होती है, उनका समय कम होता चला जा रहा है, यहां तक कि एक-एक घंटे में विधेयक पास हो रहे हैं। क्योंकि 50 परसेंट से कम समय में कोई काम हो नहीं सकता, पूरा देश हम लोगों की तरफ देख रहा है और हमें कहता है कि यहां आप आते हैं, यहां से पैसा लेते हैं लेकिन काम कुछ नहीं करते। सर, हमें इस गंभीर समस्या का कोई हल निकालना चाहिए, इसका कोई रास्ता निकालना चाहिए। सर, 1997 में एक 14 प्वाइंट्स का प्रोग्राम बनाया गया था, जिसके ऊपर आज तक अमल नहीं हो पाया। 2001 में भी इसी प्रकार से इसके लिए कुछ प्वाइंट्स बनाए गए थे, लेकिन उन पर आज तक अमल नहीं हो पाया।

सर, इसके ऊपर आपको और सारे सदन को बैठ कर एक बार यह तय करना होगा कि कैसे इसकी सिटिंग्स बढ़ाई जाएं, या तो number of sittings बढ़ाई जाएं या सबका एक consensus बना कर इसके ऊपर कुछ सोचना चाहिए। मैं आपसे यह अपील करूंगा, सरकार से अपील करूंगा कि इस गंभीर मसले के ऊपर सोचना चाहिए, क्योंकि हम जैसे नए सांसद यहां पर सीखने आते हैं, यहां बोलना चाहते हैं, लेकिन समय नहीं होता है। ऐसी स्थिति में हम अपने क्षेत्र में जाकर क्या बताएंगे? इसलिए मैं आपसे यह आग्रह करता हूँ कि इसके ऊपर आप ध्यान दें और सरकार से कह कर इसकी सिटिंग्स को बढ़ाएं।

SHRI SUKHENDU SEKHAR RAY (West Bengal): Sir, I associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI NARESH GUJRAL (Punjab): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

DR. AMEE YAJNIK (Gujarat): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI K. T. S. TULSI (Nominated): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI BINOY VISWAM (Kerala): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI ABIR RANJAN BISWAS (West Bengal): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRIMATI SHANTA CHHETRI (West Bengal): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI SUBHASISH CHAKRABORTY (West Bengal): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

श्री प्रताप सिंह बाजवा (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाये गये विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

श्री विशम्भर प्रसाद निषाद (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाये गये विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

श्री सुरेन्द्र सिंह नागर (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाये गये विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

श्रीमती जया वच्चन (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाये गये विषय से स्वयं को सम्बद्ध करती हूँ।

श्री नीरज शेखर (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाये गये विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

श्री रवि प्रकाश वर्मा (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाये गये विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

श्री रणविजय सिंह जूदेव (छत्तीसगढ़): महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाये गये विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूँ।

SOME HON. MEMBERS: Sir, we too associate ourselves with the matter raised by the hon. Member.

श्री सभापति: सिटिंग्स भी होनी चाहिए और डिस्कशन भी होना चाहिए, यह अच्छा है। There is a Private Members Bill on the same subject, we can utilize that. श्री महेश पोद्दार।

Outdated forensic medicine curriculum

SHRI MAHESH PODDAR (Jharkhand): Sir, an autopsy or post mortem report is an invaluable and essential tool in investigating the probable cause and manner of time in the event of unnatural death. For the police, the- autopsy report forms the backbone of the investigation. For the judiciary, it is critical evidence that can with a single conclusive expert statement, determine the outcome of a case. However, a vast majority of the autopsies are done incompetently and lead to justice being denied. Sir, with Safai Karamcharies performing autopsies in mortuaries, lacking even basic facilities, forensic investigations are riddled with many problems. However, the most important thing being that the forensic post-mortem is the only clinical discipline that does not have a prescribed practical teaching schedule and practical examinations or a clinical posting for internship. Sir, the only thing mandatory in the forensic studies is that you write a theoretical exam. I request the Government to look into this pressing issue and make the practical exam mandatory. Thank you.

SHRIMATI ROOPA GANGULY (Nominated): Sir, I associate myself with the matter raised by the hon. Member.

DR. VIKAS MAHATME (Maharashtra): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI SURESH GOPI (Nominated): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI AHAMED HASSAN (Karnataka): Sir, I also associate myself with the matter raised by the hon. Member.

Breaking of Himalayas and hindrance in the flow of river Ganges

श्री रेवती रमन सिंह : माननीय चेयरमैन साहब, मैं इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ कि जब से यह सेशन चल रहा है, तब से लेकर आज बड़ी मुश्किल से मुझे इसके लिए मौका मिला है। सर, जब से यह सेशन चल रहा है, तब से हम इसके लिए कोशिश कर रहे हैं, लेकिन माननीय गडकरी जी, जो इसके मंत्री हैं, वे इस पर चर्चा के लिए तैयार नहीं हैं।

मान्यवर, हिमालय और गंगा हमारी यानी भारत की संस्कृति और पहचान है। आज उसके साथ जो काम हो रहा है, उसके लिए स्वामी सदानन्द जी, जो कि आईआईटी के प्रोफेसर थे, उन्होंने 111 दिन तक अनशन करके प्राण त्याग दिए। उनकी केवल एक मांग थी कि गंगा अविरल होनी चाहिए।